केले की व्यवसायिक खेती आर्थिक रुप से लाभकारी

मैं **भूषण शरण त्यागी पुत्र श्री ओमदत्त त्यागी निवासी ग्राम झडीना विकास खण्ड गढ़मुक्तेश्वर जिला हापुड़** का एक प्रगतिशील कृषक हूँ। शुरुआत में धान, गन्ना , गेहूं की खेती करता था जिससे मेरी आय बहुत कम थी। केले की खेती करने का मुझे तकनीकी ज्ञान नहीं था केवल सुना था लेकिन जनपद में कृषि विज्ञान केन्द्र की जानकारी होने पर मेने वहां के वैज्ञानिकों से सम्पर्क किया और केले के व्यवसाय खेती का प्रशिक्षण लेकर वैज्ञानिकों की देखरेख में केले का व्यवसायिक उत्पादन 2018 से शुरु किया । जिसमें मैने केले की जी–9 प्रजाति के पौधों का रोपण 4.5 एकड़ क्षेत्रफल में किया जिससे कुल उत्पादन 1350 कुन्तल मिला। तथा बिक्री रु 1100 प्रति कुन्तल की दर से की जिससे मुझे कुल आय रु14,85,000 प्राप्त हुई जिसमें कुल खर्च रु 4,50,000 का आया इस प्रकार केले की खेती से कुल शुद्ध आय रु 10,35,000/– प्राप्त हुआ। इस प्रकार वैज्ञानिको की देखरेख में केले की खेती करने से मुझे आर्थिक लाभ अधिक प्राप्त हुआ। जिससे मेरी आर्थिक स्थिति में काफी सुधार हुआ समाज में मान सम्मान में बढ़ोत्तरी हुई। मेरी केले की व्यवसाय की खेती को देखने के लिए जनपद के प्रगतिशील कृषकों ने भ्रमण कर इसको देखा है तथा तकनीकी जानकारी प्राप्त की है।

केला , पपीता एवं नीबू की खेती, आर्थिक लाभकारी

मैं रजनीश कुमार त्यागी पुत्र श्री सत्यवीर सिंह त्यागी निवासी ग्राम दतियाना विकास ,खण्ड गढ़मुक्तेश्वर , जनपद – हापुड़ जो पूर्व में जनपद गाजियाबाद की तहसील थी , मैं एक प्रगतिशील कृषक हूँ और कृषि विज्ञान केन्द्र गाजियाबाद से केला , पपीता की उत्पादन तकनीकी का प्रशिक्षण लेकर वैज्ञानिक विधि से खेती करनी शुरु की । जून 2018 में जनपद – हापुड में कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना होने के बाद से बृहद स्तर पर केन्द्र के वैज्ञानिको से तकनीकि सलाह एवं प्रशिक्षण लेकर पपीता के साथ नीबू की सह–फसली खेती भी शुरु करना की । साथ ही समय –समय पर सरदार वल्लभ भाई पटेल मेरठ से सम्पर्क कर केला की टिश्यू कल्चर विधि से तैयार पौध के बारे में तकनीकी ज्ञान अर्जित कर गांव के अन्य किसानों को प्रेरित किया। शुरुआत में खेती से प्राप्त उत्पाद की बिक्री करने में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा लेकिन जून 2018 में कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना के पश्चात् सभी प्रकार की तकनीकी सहायता मेरे गांव के नजदीक स्थापित बाबूगढ़ कृषि विज्ञान केन्द्र से प्राप्त हो जाती है। शुरुआत में धान,गन्न की परमपरागत खेती करता था। जिससे कम आय प्राप्त हो रही थी। कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आने पर शुरुआत में मैने तीन एकड़ क्षेत्रफल पर केला की जी–9 प्रजाति को लगाया जिसमें लगभग 900 कुन्तल केले का उत्पादन हुआ। जिसे बिक्री करने पर लगभग कुल आय 1200रु प्रति कुन्तल की दर से रु 10,80,000/– हुई । जिसमें कुल उत्पादन लागत रु 2,00,000/– का खर्च हुआ। इस प्रकार केले की खेती से शुद्ध आय रु 8,80,000/– प्राप्त हुई। दूसरी ओर मैने पपीता की रेड लेडी –786 की प्रजाति को एक एकड़ खेत में लगाया जिससे कुल उत्पादन 250

कुन्तल प्राप्त हुआ बिक्री करने पर रु 1400/– प्रति कुन्तल की दर से कुल आय रु 3,50,000/– हुई जिसमें कुल उत्पादन लागत रु 50,000/– खर्च हुये। इस प्रकार पपीते की खेती से शुद्ध आय रु 3,00,000/– प्राप्त हुई। इसके साथ – साथ मेने लगभग 3.5 एकड़ क्षेत्रफल पर नीबू का बाग लगाया। जिसमें प्रजाति एस0एस0 को लिया जिससे कुल उत्पादन लगभग 200 कुन्तल प्राप्त हुआ। स्थानीय बाजार में बिक्री करने पर रु 4,000/– प्रति कुन्तल की दर से कुल आय रु 8,00,000 प्राप्त हुये तथा नीबू की खेती पर कुल व्यय रु 50,000/– का आया। इस प्रकार नीबू की खेती से शुद्ध आय रु 7,50,000/– हुई। इस प्रकार पपीता , केला व नीबू की खेती से वर्ष में कुल शुद्ध आय रु 19,80,000/– प्राप्त हुई । इस प्रकार फलों की खेती करने से धान,गेहूं, गन्ना की खेती करने की अपेक्षा अधिक लाभ प्राप्त होता है। फलों की खेती से मेरी आर्थिक स्थिति में काफी सुधार हुआ। समाज में सम्मान भी बढ़ा, साथ ही साथ मेरे यहाँ जिला एवं बाहर के जिलों से कई प्रगतिशील कृषकों ने खेती का भ्रमण किया है जिससे वे भी इस ओर कदम बढ़ाने के लिए अग्रसर हुये है।

कपड़े के केले से सेहत बनाएंगे अफ्रीकी

15 सदस्य अफ्रीकी दल ने बुधवार को दतियाना गांव में केले के बाग का किया निरीक्षण

दतियाना गांव में केले की बागवानी का निरीक्षण करने पहुंचे सात अफ्रीकी की टीम।

बागवानी का किया रुख तो बदलने लगी किसानों की किस्मत

गांव दतियाना के किसान रजनीश त्यागी ने 20 बीघे में नींबू, 40 बीघे में केला व दो एकड़ में लगाया पपीता

स्वाद और सुगंध से भरा, ये है महुआ

वन महोत्सव के चलते गढ़ क्षेत्र में रोपे गए हजारों पौधे

गन्ने के साथ सब्जियों की सह–फसली खेती अधिक लाभकारी

मैं संजीव कुमार पुत्र श्री जयपाल सिंह निवासी ग्राम कनिया कल्याणपुर विकासखण्ड सिम्भावली जनपद हापुड़ का निवासी हूँ मैं अपनी पूरी खेती पर धान, गेहूं, गन्ना की खेती करता था लेकिन उससे मुझे अधिक लाभी प्राप्त नहीं होता था वर्ष भर में मुझे धान,गेहूं, गन्ना से लगभग रु 1.25–1.5 लाख रुपये प्रति हे0 की शुद्ध आय होती थी। मैंने कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिको से सम्पर्क किया और अपनी मनः स्थिति से वैज्ञानिको को अवगत कराया उन्होने मुझे शरद कालीन गन्ने के साथ सब्जियों की खेती करने के लिये प्रोत्साहित किया मैने उनको बताया मेरे पास मात्र 05 एकड जमीन है उस पर उन्होने सलाह दी कि दो एकड क्षेत्रफल में शरद कालीन गन्ने की बुआई ट्रेंन्च विधि से 1.0 मीटर की दूरी पर करें तथा उसमें दो एकड़ क्षेत्रफल पर बैंगन की नवकिरण प्रजाति का रोपण किया तथा एक एकड़ क्षेत्रफल में गन्ने के साथ ब्रोकली तथा एक एकड क्षेत्रफल में गन्ने के साथ पत्ता गौभी की सीधी मेड पर बुआई की जिसमें पत्तागोभी एवं बैंगन को सितम्बर माह में रोपण किया गया तथा ब्रोकली की बुआई अक्टूबर माह में की गयी। जिसमें पत्तागौभी एवं ब्रोकली की गन्ना की दो लाईनों के बीच में दो – दो लाइनें ली गयी तथा बैंगन की एक लाईन का रोपण किया गया। इस प्रकार गन्ना के साथ पत्तागौभी,

ब्रोकली तथा बैंगन करने पर प्राप्त आय – व्यय का विवरण निम्नवत है।

क्रम0स0	फसल का नाम	सहफसल से उत्पादन कु0	गन्ने का उत्तपादन कु0	सह फसल कुल आय रुपये	गन्ना से कुल आय रुपये	कुल शुद्ध आय गन्ना + सह फसल रुपये
1	गन्ना + पत्तागौभी	265	706.25	1,88,000	1,15,875	3,03,875
2	गन्ना + ब्रोकली	105	706.25	1,95,000	1,15,875	3,10,875
3	गन्ना + बैंगन	205	687.50	2,24,000	1,10,250	3,34,250

जब मैं केवल एकल गन्ना की खेती करता था तो मुझे पूर्व के वर्षो 1 से 1. 25 लाख प्रति हे0 की शुद्ध आय प्राप्त होती थी। लेकिन जब से मैने वैज्ञानिकों से तकनीकी सलाह लेकर ारद कालीन गन्ने के साथ सब्जियों (गन्ना + पत्तागौभी, गन्ना + ब्रोकली, गन्ना + बैंगन) की खेती शुरु की है उससे मुझे शुद्ध आय कम्रशः 3,03875, 310875 एवं 3,34250 की शुद्ध आय प्राप्त हुयी है जो लगभग दोगनी है मेरे इस प्रकार से खेती करने को गांव के तथा आसपास के कृषकों ने भी शुरु कर दी है।

फल उत्पादन से बदली आर्थिक स्थिति

मैं विकार अहमद खान पुत्र श्री तौकीर अहमद खान

निवासी ग्राम बाबूगढ़ विकास खण्ड गढ़मुक्तेश्वर

जनपद हापुड़ का निवासी हूँ तथा स्नातक तक पढ़ाई की है।

सरकारी नौकरी न मिलने पर मैने अपनी पुस्तैनी खेती को ही अपना व्यवसाय बना लिया। परम्परागत खेती में धीरे – धीरे परिवर्तन करना प्रारम्भ किया । क्योकि उस समय हापुड़ में कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना नहीं थी। कृषि विज्ञान केन्द्र गाजियाबाद के तकनीकी सलाह लेकर 7.5 एकड़ क्षेत्रफल पर आम का बाग लगाया जिसमें दशहरी, चौंसा, लग़डा एवं बोम्बेग्रीन प्रजाजियों का चयन किया तथा 2.0 एकड़ क्षेत्रफल में अमरुद का बाग लगाया जिसमें इलाहाबाद सफेदा , लखनऊ – 49 तथा ललित प्रजाजितयों का चयन किया इस समय दोनों बागों से प्राप्त हो रहा है। जो धान,गेहूं एवं गन्ना की अपेक्षा अधिक मिल जाता है। शुरुआत में प्रथम पांच वर्ष तक आम के बाग में तथा तीन वर्ष तक अमरुद के बाग के अन्दर सहफसल की खेती जिसमें सब्जियों की खेती शुरु की जिसमें फूलगौभी, बन्दगौभी, बैंगन , करेला, खीरा तथा कददू प्रमुख थी। जबकि अन्य जमीन पर धान , गेहूं , सरसों , उडद तथा गन्ना की खेती करता हूँ। बाग लगाने के शुरुआत में मुझे सब्जियों से ही उत्पादन प्राप्त हुआ जो प्रतिवर्ष शुद्ध आय के रुप में रु 3,50,000–4,00,000 प्रति हेक्टेयर तक प्राप्त हुआ लेकिन धीरे– धीरे अमरुद से उत्पादन मिलने पर रु 5,50,000–6,00,000 प्रति हेक्टेयर तक शुद्ध आय प्राप्त हुई जो धान, गेहूँ, गन्ना की अपेक्षा अधिक है। जब से कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना हुई है मैं वहां से तकनीकी जानकारी लेकर धान, गेहूं, सरसों , उडद तथा गन्ना की खेती भी में वैज्ञानिक विधि से करता हूँ जिससे उन फसलों के उत्पादन में भी बढ़ोत्तरी हुई है। मुझे आम एवं अमरुद से भरपूर उत्पादन प्राप्त हो रहा है तथा शुद्ध आय के रुप में लगभग रु 8,00,000 से 10,00,00 तक प्राप्त हो जाता है। जिससे मैं अपने घर परिवार को चलाने में सक्षम हूँ तथा बच्चों को उच्च शिक्षा दिलानें में भी सक्षम है। मेरी इस खेती को देखकर गांव के अन्य लोग भी अनुसरण कर रहे है।

मशरुम उत्पादन से आया आर्थिक स्थिति में बदलाव

मैं विकास कुमार पुत्र श्री चन्द्रप्रकाश त्यागी निवासी ग्राम गढ़मुक्तेश्वर विकास खण्ड गढ़ मुक्तेश्वर , जनपद हापुड़।

जो पूर्व में जनपद गाजियाबाद की तहसील थी का मैं एक प्रगतिशील कृषक हूँ। स्नातक स्तर तक शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात सरकारी नौकरी के लिए काफी प्रयास किया लेकिन कही सफलता न मिलने पर मैने कृषि विज्ञान केन्द्र गाजियाबाद से सम्पर्क किया तो उन्होने लघु व्यवसाय के रुप में बटन मशरुम करने की सलाह दी। इसके पश्चात मैने वहां से प्रशिक्षण लेकर परम्परागत विधि से केवल सर्दी के मौसम (अक्टूबर से मार्च तक) मशरुम की खेती प्रारम्भ की, लेकिन उसमें आर्थिक लाभ कम प्राप्त हुआ इसके पश्चात मशरुम की खेती वर्ष भर कैसे ले इसका प्रचार किया और सरदार वल्लभ भाई पटेल कृषि एवं प्रौ0 विश्वविद्यालय से सम्पर्क कर वहां से और तकनीकि जानकारी प्राप्त की तथा सितम्बर 2017 में वातानूकूलित मशरुम उत्पादन यूनिट स्थापित की जिसका उदघाटन सरदार वल्लभ भाई पटेल कृषि एवं प्रौ0 विश्वविद्यालय के भूतपूर्व कुलपति प्रौ0 गयाप्रसाद जी ने उस यूनिट का उदघाटन किया था। उस वातानूकूलित मशरुम यूनिट से पूरे वर्ष भर बटन मशरुम का उत्पादन करता हूँ। शुरुआत में उत्पादन एवं बिक्री करने में परेशानियों का सामना करना पड़ा, लेकिन वर्ष 2018 में जनपद में कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना के बाद अब मुझे मशरुम से सम्बन्धित सभी तकनीकी सहायता कृषि विज्ञान केन्द्र हापुड़ से प्राप्त हो जाती है। वर्ष 2017 में यूनिट से लगभग 45–60 कुन्तल प्रति माह (1.5–2.0 कुन्तल प्रति दिन) का औसत उत्पादन प्राप्त हुआ। जिसकी औसत बिक्री वर्ष भर रु 125 प्रति किलोग्राम की दर से की गई। इस प्रकार शुद्ध आय रु

2,47,500–3,30,000/– प्राप्त हुआ। वर्ष 2019 में मुझे 75 –90 कुन्तल प्रतिमाह की उपज प्राप्त हुयी जिसकी औसत बिक्री रु 120 प्रति किलो की दर से की गयी। जिससे शुद्ध आय रु 4,12,500रु–रु 4,95,000/– प्राप्त हुआ है। इसी के साथ प्रतिवर्ष लगभग रु1,25000/– का बटन मशरुम का अचार बनाकर तथा सितम्बर से अक्टूबर तक लगभग रु 2,00,000/– से 2,50,000/– की मशरुम कम्पोस्ट बनाकर बिक्री की गई। इस प्रकार वर्ष 2019 सभी से कुछ शुद्ध आय रु 7,37,500 से रु 8,70,000/– प्राप्त हुई। इसी के साथ – साथ कृषि विज्ञान केन्द्र हापुड़ वैज्ञानिको के साथ मिलकर जनपद तथा अन्य राज्यों की कृषकों को मशरुम उत्पादन पर प्रशिक्षण देने का कार्य शुरु किया है। जिसमें वर्ष 2020 में 8 राज्यों के 225 कृषकों को प्रशिक्षित किया है जिसमें से लगभग 60–70 प्रतिशत कृषक स्वयं का मौसम आधारित (अक्टूबर से मार्च तक) बटन एवं डींगरी मशरुम का उत्पादन कर रहे हैं। मशरुम के व्यवसाय से मेरी आर्थिक स्थिति में काफी सुधार आया है।

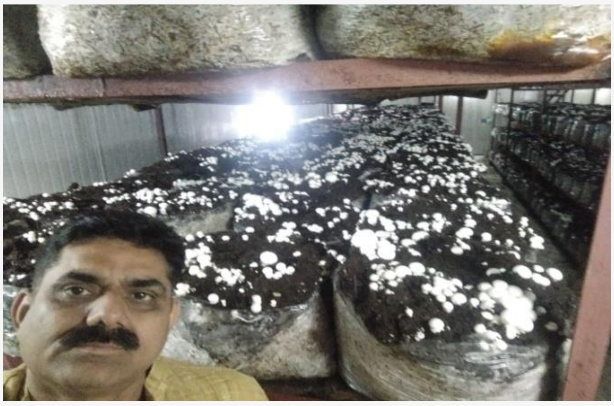

मुख्य अतिथि प्रो० गया प्रसाद जी मा० कुलपति, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौ. वि.वि. मेरठ द्वारा मन्युक एग्रो, मशरूम उत्पादन इकाई, गढमुक्तेश्वर – जनपद – हापुड़ का उद्घाटन करते हुये

कृषि विभिन्नता को अपनाकर एक नवोन्वेषी किसान बने श्री जय प्रकाश त्यागी

कुछ अलग करने की इच्छा को साकार करने की सोच के साथ खेती से अच्छा मुनाफा प्राप्त करने के लिए अलग–अलग प्रयोग करने वाले श्री जयप्रकाश त्यागी पुत्र श्री जग्गू सिंह जो कि ग्राम सिखेड़ा पोस्ट सिंभावली जनपद हापुड़ उत्तर प्रदेश में रहते हैं।

वह हमेशा खेती में कुछ अलग सोच के साथ नए प्रयोग करने की प्रेरणा कृषि विज्ञान केंद्र पर जाकर पूरी हुई । श्री जय प्रकाश त्यागी ने एम0ए0 राजनीतिक विज्ञान आई0जी0डी0 मुंबई से किया । उनका जन्म 25 जुलाई 1946 को हुआ था । शैक्षिक योग्यता पूरी करने के बाद इन्होंने पूर्व में कई संस्थाओं से प्रशिक्षण एवं पुरस्कार प्राप्त किए लेकिन हापुड़ जिला बनने के बाद कृषि विज्ञान केंद्र बाबूगढ़ में वैज्ञानिकों के संपर्क में आने के बाद गन्ने की खेती दूरी प्रबंधन 4x4 वर्ग मीटर की दूरी कर सहफसली को अपनाया।

गन्ना + सरसों , गन्ना + बैंगन, गन्ना + मिर्च

फसल	किस्म	उत्पादकता (कु0/हे0)
गन्ना	को. 0238	980.00
बैगन	नवकिरण	360.00
मिर्च	ए0के0 – 47	96.00

आय –

गन्ना + (बैंगन + मिर्च) 1:1

फसल	**कुल लागत (रू0/हे0)**	**शुद्व आय (रू0/हे0)**
गन्ना	82560.00	274400.00
	92500.00	294000.00
बैंगन	68500.00	92000.00
मिर्च	52500.00	77000.00

क्षेत्रफल विस्तार –

वर्ष	तकनीकी अपनाने से पहले			तकनीकी अंगीकृत करने के बाद		
	क्षेत्रफल (हे0)	कुल गॉव	कुल कृष	क्षेत्रफल(हे0)	कुल गॉव	कुल कृषक
2018	2.0	01	01	–	–	–
2019	15.0	05	10	135.0	37	88
2020	–	–	–	218.0	62	165
2021	–	–	–	230.0	68	172
2022	–	–	–	247.0	72	181

पुरस्कार /सम्मान /प्रशस्ति पत्र प्रमाण पत्र, मैडल –

- भारत सरकार – 1981 आकाशवाणी नई दिल्ली गेहूं एवं धान की काश्त।
- उत्तर प्रदेश सरकार – 1993 जिला ग्रामीण विकास संस्थान दादरी, गाजियाबाद उत्तर प्रदेश।
- गुजरात सरकार – 2013 वाइब्रेंट गुजरात में श्री नरेंद्र मोदी मुख्यमंत्री गुजरात द्वारा प्रमाण पत्र।
- उत्तर प्रदेश सरकार – 2013 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद उत्तर प्रदेश जिला विज्ञान क्लब हापुड़।
- भारत एवं महाराष्ट्र सरकार – 2014 कृषि वसंत नागपुर 2014
  (अ) पशु संवर्धन एवं दुग्ध व्यवसाय
  (ब) जैविक एवं बायोडायनेमिक कृषि
- भारत एवं महाराष्ट्र सरकार – दलहन में उत्पादन एवं आत्मनिर्भरता (तीन पुरस्कार)
- उत्तर प्रदेश सरकार – 2014 किसान सम्मान पुरस्कार जनपद हापुड (गेहूं में प्रथम)
- उत्तर प्रदेश सरकार – 2016 विकास दिवस डी0बी0टी0 योजना।
- उत्तर प्रदेश सरकार 2016 – विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद उत्तर प्रदेश जिला विज्ञान क्लब हापुड़

- उत्तर प्रदेश सरकार – 2016 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद उत्तर प्रदेश जिला विज्ञान क्लब अमरोहा।
- भारत सरकार 2016 – अवार्ड ऑफ ऑनर राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, नई दिल्ली।
- उत्तर प्रदेश सरकार – 2016 डी0बी0टी0 योजना।
- भारत सरकार 2017 गेस्ट ऑफ ऑनर नेशनल काउंसिल फॉर साइंस एंड टेक्नोलॉजी कम्युनिकेशन दिल्ली ।
- उत्तर प्रदेश सरकार 2018 किसान कल्याण कार्यशाला कृषि विभाग जनपद हापुड़ उत्तर प्रदेश।
- उत्तर प्रदेश सरकार 2018 गोल्डन मेडल जिला विज्ञान क्लब हापुड़।
- उत्तर प्रदेश सरकार 2020 किसान सम्मान पुरस्कार कृषि विज्ञान केंद्र, जनपद हापुड़।
- उत्तर प्रदेश सरकार 2021 किसान सम्मान पत्र 75 वां भारत अमृत महोत्सव कृषि विभाग उत्तर प्रदेश हापुड़।

कृषि प्रशिक्षण –

- ✓ रेडियो कृषि प्रशिक्षण कार्यक्रम आकाशवाणी धान एवं गेहूं गन्ना की काश्त नई दिल्ली।
- ✓ जिला ग्राम्य विकास संस्थान दादरी, गाजियाबाद गौतम बुद्धनगर 1990 से 2002 तक।
- ✓ कृषि विभाग कृषि विविधीकरण परियोजना आत्मा योजना राष्ट्रीय कृषि योजना सी0एफ0टी0 एवं आई0सी0टीपी योजनाओं के अंतर्गत कई प्रशिक्षण।
- ✓ भारतीय कृषि अनुसंधान नई दिल्ली 13 से 22 अक्टूबर 2008।
- ✓ राजकीय कृषि प्रशिक्षण केंद्र मुजफ्फराबाद सहारनपुर (तीन प्रशिक्षण) आई0पी0एम0 एवं आई0पी0 एन0एम0 एंड बायो डायनेमिक फार्मिंग।
- ✓ राजकीय कृषि प्रशिक्षण बुलंदशहर 14 मार्च 2013 से 18 मार्च 2013 एवं 2 जनवरी 2014 से 6 जनवरी 2014 तक।
- ✓ कृषि विज्ञान केंद्र हापुड़ के कई प्रशिक्षण।
- ✓ फार्म मैकेनाइजेशन रहमान खेड़ा लखनऊ 7 से 11 सितंबर 2015 तक।
- ✓ नेशनल मिशन ऑन ऑयल सीडस एंड ऑयल पाम योजना 31 दिसंबर 2015 से 1 जनवरी 2016 तक ।
- ✓ किसान जागरूकता प्रशिक्षण गन्ना संस्थान लखनऊ 23 अगस्त 2017 तक।

कृषि भारत– भ्रमण –

- केरल 2001 कृषि एवं पंचायती राज्य अध्ययन हेतु 25 मई 2001 से 1 जून 2001 तक।
- उत्तराखंड – गोविंद वल्लभ कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय पंतनगर 1993 1998 2000 2013।
- गुजरात 2013 विब्रान्त गुजरात एग्रीटेक समिट समित 2013 गांधीनगर गुजरात
- महाराष्ट्र 2014 कृषि वसंत नागपुर 2014 (भारत एवं महाराष्ट्र सरकार द्वारा आयोजित)
- हरियाणा 2014 विकास मेला करनाल हरियाणा ।
- उत्तर प्रदेश मोदीपुरम, मुजफ्फरनगर, कानपुर, पूसा नई दिल्ली।

कृषि विशेष –

- ✓ मुख्यमंत्री द्वारा समीक्षा बैठक 23 दिसंबर 2015 को हापुड़ जनपद से नामित।
- ✓ मुख्यमंत्री द्वारा वीडियो कॉन्फ्रेंस में 6 मई 2015 में प्रतिभाग।
- ✓ राष्ट्रीय कृषि लागत एवं मूल्य निर्धारण बैठक 4 मई 2016 नई दिल्ली में उत्तर प्रदेश किसान प्रतिनिधित्व।
- ✓ उप गन्ना आयुक्त मेरठ उत्तर प्रदेश की समीक्षा बैठक में प्रतिभाग।
- ✓ गन्ना आयुक्त लखनऊ 2 अप्रैल 2016 की समीक्षा बैठक में प्रतिभाग।
- ✓ प्रधानमंत्री द्वारा जैव ईंधन समीक्षा बैठक में विज्ञान भवन नई दिल्ली।
- ✓ राज्य स्तरीय कृषक गोष्ठियां उत्तर प्रदेश लखनऊ।

अन्य उपलब्धियां –

हरित क्रांति भारतवर्ष के पंजीकृत 2000 प्रगतिशील किसानों में से पुरस्कृत किसान जिन्होंने प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री लाल बहादुर शास्त्री आव्हान पर आकाशवाणी नई दिल्ली द्वारा संचालित रेडियो कृषि शिक्षा कार्यक्रम एवं हरित क्रांति के जनक डॉक्टर श्री स्वामीनाथन एवं कृषि वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में हरित क्रांति में योगदान दिया था ।

1.गन्ना क्रांति – 5 मीटर लंबा करना उत्पादक किसान के रूप में पुरस्कृत किसान ।

2.श्वेत क्रांति – ग्रामीण आंचल में पराग दुग्ध डेयरी की स्थापना।

3.औषधि खेती – हल्दी अदरक सफेद मूसली सर्पगंधा अश्वगंधा आदि में ज्ञान।

4.जैविक एवं बायोडायनेमिक खेती में अनुभव एवं प्रशिक्षण।

5.संयोजक कृषक चर्चा मंडल सिखेड़ा (जिला ग्राम विकास संस्था दादरी उत्तर प्रदेश)।

6.अचीवर कृषक – फार्म स्कूल खेड़ा 2011।

7.कोषाध्यक्ष – कृषि विविधीकरण परियोजना जीविका स्वयं सहायता समूह सिखेड़ा हापुड़।

8.पूर्व किसान – किसान मित्र योजना उत्तर प्रदेश (2008 से 2009 तक)

9.बीज मित्र – राष्ट्रीय बीज निगम उत्तर प्रदेश 2021

राष्ट्रीय कृषि लागत एवं मूल्य निर्धारण बैठक नई दिल्ली 04.05.2016

KRISHI VASANT
Central Institute of Cotton Research, Nagpur
9–13 February, 2014
राष्ट्रीय कृषि मेले में जयप्रकाश त्यागी को पुरस्कृत करते हुए
श्री जे0 एस0 सिद्धू कृषि आयुक्त भरत सरकार।

किसान सम्मान दिवस 23-12-2020
कृषि विज्ञानकेंद्र हापुड़ ।

VIGYAN DHARA 2016
जयप्रकाश त्यागी को पुरस्कृत करते हुए श्री विरेन्द्र कुमार शर्मा
जिला विद्यालय निरीक्षक हापुड़

पेठा व्यवसाय में सफल महिला उद्यमी की कहानी

पेठा(PETHA), जो मुख्य रूप से भारतीय उपमहाद्वीप की एक नरम कैंडी है जिसे लौकी या सफेद कद्दू से बनाया जाता है और यह आगरा में बहुत लोकप्रिय है और इसे मिठाई के रूप में या भोजन के बाद भी खाया जाता है। श्रीमती सपना शर्मा 39 वर्ष (एम0ए0, बी0एड) हैं जो हापुड़ जिले की मूल निवासी हैं। वह वर्तमान में सफल उद्यमी हैं जिन्होंने हापुड़ की महिलाओं के लिए पेठा के क्षेत्र में एक उदाहरण स्थापित किया है।

परिचय – मैंने मेरठ से सीसीएस यूनिवर्सिटी से पोस्ट ग्रेजुएशन पूरा किया है और अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद मैंने 2015–2019 तक निजी स्कूल में पढ़ाया है।मैंने बिना किसी औपचारिक प्रशिक्षण या कौशल के खाद्य प्रसंस्करण के क्षेत्र में एक उद्यमी के रूप में अपना नया उद्यम शुरू करने के लिए 2019 में अपनी नौकरी छोड़ दी।

सफलता का पहला कदम – खाद्य प्रसंस्करण में अधूरे वैज्ञानिक ज्ञान के कारण सफल नहीं हुई। उसके बाद मैंने कृषि विज्ञान केंद्र बाबूगढ़ हापुड़ से संपर्क किया और उन्होंने प्रशिक्षण के लिए Her & Now संगठन से संपर्क करने की सलाह दी।

सोच – मैंने स्थानीय रूप से उपलब्ध कच्चे माल से पेठा का उत्पादन करके अपनी उत्पादन गतिविधियाँ शुरू कीं और उत्पादों को स्थानीय बाजार में बेचा तथा अपने उत्पाद को विदेशों तक लोकप्रिय बनाने की सोच से एक लक्ष्य को जन्म दिया।

सोच को साकार करने के लिए प्रशिक्षण और प्रेरणा –

- ✓ आय संतोषजनक नहीं थी और मैंने 2019 में HER & Now संगठन से संपर्क किया, यह जानने के लिए कि मेरी प्रसंस्करण इकाई और उत्पादकता में सुधार के लिए कैसे और मार्गदर्शन किया जाए।
- ✓ मेरे उत्पादों की उत्पादकता और स्वीकार्यता बढ़ाने के लिए, संगठन ने सुझाव दिया कि मुझे खाद्य प्रसंस्करण और विपणन रणनीति पर कुछ प्रशिक्षण की आवश्यकता है।

✓ GIZ मॉड्यूल के साथ एक सप्ताह के प्रशिक्षण में शामिल हो कर तथा हापुड़ के प्रधान मंत्री प्रशिक्षण केंद्र में 2021 में विपणन(Marketing) विश्लेषण, SWOT विश्लेषण, खुदरा(Retaililing) और उत्पादों से संबंधित पैकेजिंग का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

पहला अनुभव –

- प्रशिक्षण के बाद मैंने प्राकृतिक फलों, सूखे मेवों और पत्तियों (जैसे आम, केसर अंगूरी, भरवां पेठा, गुड़ पेठा, पान स्वाद आदि) के साथ कच्चे पेठे का उत्पादन शुरू किया।
- मैंने जून 2021 और मार्च 2022 (एमओएसडीई द्वारा प्रायोजित) में सनको राइजिंग ऑर्गनाइजेशन (एनजीओ) में आयोजित प्रशिक्षण गतिविधियों में और अधिक व्यावहारिक प्रदर्शन दिया, जो तकनीकी रूप से हापुड़ में HER & NOW द्वारा आयोजित किया गया था।
- दोनों प्रशिक्षण कार्यक्रम में, मैंने विभिन्न व्यंजनों और तकनीक के साथ अभिनव(innovative) पेठे आदि के निर्माण का प्रदर्शन करने का पहला अनुभव दिया।

उपलब्धि – प्रशिक्षुओं और चुनिंदा खुदरा विक्रेताओं के सामने मेरे उत्पादों की शुरूआत के बाद, स्वाद वाले पेठे ने लोकप्रियता हासिल की है और अब इसे आम, बनारस पान पेठा, भरवां पेठा और गुड़ पेठा आदि के रूप में जाना जाता है। वर्तमान में मैं कच्चे पेठे के 25 प्रकार के जैव उत्पाद(BIO PRODUCT) बना रही हूं।

सम्मान एवं लोकप्रियता – मांग में भी तेजी आई है और मैंने पहले से ही अधिक जनशक्ति को शामिल करके उत्पादन में वृद्धि की एवं महिला शक्ति को महिला उद्यम के क्षेत्र में एक दिशा दी। इस बीच मेरे प्रदर्शन के पुनर्मूल्यांकन में मुझे **"पेठा रानी"** के रूप में सम्मानित किया गया। मेरा पेठा जर्मनी, इटली, लंदन आदि विदेशों में बेचा जाता है। और पेठा शॉप के दो आउटलेट गाजियाबाद और शाहिबाबाद में शीघ्र खुलेंगे। पिछले कुछ महीनों में,लगभग 50,000 प्रति माह की शुद्ध आय अर्जित कर रही है जो प्रति वर्ष 6 लाख रुपये में तब्दील हो जाती है।

जनपद की कृषि महिलाओं पर प्रभाव एवं प्रसार – कृषि विज्ञान केंद्र ,बाबूगढ़ के संबंधित वैज्ञानिकों एवं स्वयं सहायता समूह द्वारा आयोजित दो प्रशिक्षणों के दौरान मुझे हापुड़ जिले के अटुटा गाँव और सिमरौली गाँव के प्रशिक्षुओं के बीच नए संपर्क (स्वयं सहायता समूह) मिले, जिन्होंने आय सृजन के लिए पेठा बनाने के उद्यम को आसानी से स्वीकार कर लिया।

पेठा निर्माण में स्वास्थ्य संबंधी नवाचार एक खोज एवं पहल – पूर्व में कोविड –19 जैसी बीमारी को देखते हुये मेरे द्वारा शरीर की प्रतिरोधकता क्षमता को महत्व देते हुये एवं शुगर फ्री पेठा उत्पादन में एक पहल की गई। जिसमें स्टेविया की पत्तियों से स्वास्थ्य के लिए चीनी की जगह शुगर फ्री पेठा विकसित करने पेठा की एक नई वैराईटी उत्पादित करने की पहल है। यह पेठे की 26वीं वैरायटी है जिसे मैं बाजार में पेश करूंगी।

पेठा व्यवसाय से आय एवं व्यय विवरण – एक नजर

पेठा का प्रकार	कुल मात्रा(किग्रा0)	उत्पादन लागत (रू0 में)	सकल आय(रू0 में)	शुद्व आय (रू0 में)	लागत अनुपात लाभांश
बनारसी पेठा	70	5600	24500	20900	1:4.30
सूखा पेठा	100	4200	12000	7800	1:2.85
मावा पेठा	150	8400	48000	39600	1:5.70

बनारसी पेठा @ 350/किग्रा0, सूखा पेठा @ 120/किग्रा0, मावा रोल @ 320/किग्रा0

An Exclusive Petha

More then 25 varieties of delicious Petha

S.No.	Product Name
1.	Petha Saada (Dry)
2.	Petha Kesar Saada (Dry)
3.	Petha Poppins (Dry petha with 4 flavours)
4.	Petha Angoori
5	Petha Kesar Angoori
6.	Petha Khus Angoori
7.	Petha Lichi Rasbhari
8.	Petha Kesar Rasbhari
9.	Petha Mango
10.	Petha Pineapple
11.	Petha Sweet Heart (Heart shaped rose flavoured)
12.	Petha Kheer Kadam
13.	Petha Shahi Angoori
14.	Petha Gulab Ladoo
15.	Petha Mango Roll
16.	Petha Green Mango Roll
17.	Petha Stuff
18.	Petha Mawa Roll
19.	Petha Pakiza
20.	Petha Lauj
21.	Petha Chocolate
22.	Petha Orange Milk Chocolate
23.	Petha Banarasi Paan
24.	Petha Sweet Mango Paan
25.	Petha Gunjiya
26.	Petha Sugar Free (NA) Coming soon
27.	Kaju Dalbiji
28.	Handmade Chocolates
29.	Handmade Papad (Pandit Gangajali Maharaj Papad)